Journal of Research and Development
A Multidisciplinary International Level Referred and Double Blind Peer Reviewed, Open Access
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-18, Issue-2(A)| February - 2026

Original Article

स्वामी विवेकानन्द जी का जीवनवृत्त : युवाओं के उज्ज्वल भविष्य में एक मानव-चिंतनात्मक अध्ययन

डॉ. सुधीर कुमार शर्मा
आचार्य इतिहास विभाग
Email: sssharma54186@gmail.com

Manuscript ID:
JRD -2026-180237
ISSN: 2230-9578
Volume 18
Issue 2(A)
Pp. 188-190
February - 2026
Submitted: 18 Jan. 2026
Revised: 28 Jan. 2026
Accepted: 13 Feb. 2026
Published: 28 Feb. 2026

शोध-सारांश

प्रस्तुत शोध-पत्र का उद्देश्य स्वामी विवेकानन्द के जीवनवृत्त एवं विचारों का मानव-चिंतन के परिप्रेक्ष्य में विश्लेषण करना है तथा यह अध्ययन करना है कि उनके विचार किस प्रकार युवाओं के उज्ज्वल भविष्य के निर्माण में सहायक सिद्ध होते हैं। स्वामी विवेकानन्द केवल एक आध्यात्मिक संन्यासी नहीं थे, बल्कि वे मानव-मूल्यों, राष्ट्रनिर्माण और युवा-चेतना के महान विचारक थे। उनका संपूर्ण जीवन आत्मविश्वास, कर्मनिष्ठा, सेवा-भाव और निर्भीकता पर आधारित मानव-दर्शन का जीवंत उदाहरण प्रस्तुत करता है। इस शोध में स्वामी विवेकानन्द के जीवन के प्रमुख चरणों—बाल्यावस्था, रामकृष्ण परमहंस से आध्यात्मिक दीक्षा, संन्यास-काल, भारत-भ्रमण तथा शिकागो विश्व धर्म महासभा—का मानव-चिंतनात्मक अध्ययन किया गया है। अध्ययन से स्पष्ट होता है कि उन्होंने युवाओं को आत्मगौरव, आत्मनिर्भरता और चरित्र-निर्माण की प्रेरणा दी। उनके अनुसार शिक्षा का उद्देश्य केवल ज्ञानार्जन नहीं, बल्कि मनुष्य-निर्माण है, जो युवा वर्ग को सामाजिक एवं नैतिक रूप से सशक्त बनाता है।

शोध-निष्कर्ष यह दर्शाते हैं कि स्वामी विवेकानन्द का मानव-चिंतन आज के युवाओं में आत्मविश्वास, नैतिक चेतना और राष्ट्रप्रेम के विकास के लिए अत्यंत प्रासंगिक है। उनके विचार आधुनिक समाज में युवाओं की मानसिक, सामाजिक एवं नैतिक समस्याओं के समाधान का प्रभावी मार्ग प्रस्तुत करते हैं। इस प्रकार यह अध्ययन सिद्ध करता है कि स्वामी विवेकानन्द का जीवनवृत्त और दर्शन युवाओं के उज्ज्वल भविष्य के निर्माण में मार्गदर्शक भूमिका निभाता है।

कूट शब्द : *स्वामी विवेकानन्द, मानव-चिंतन, युवा चेतना, राष्ट्रनिर्माण, शिक्षा दर्शन, आत्मविश्वास, मानव-मूल्य, चरित्र निर्माण, सेवा-भाव, भारतीय दर्शन।*

प्रस्तावना

भूमिका (Introduction)

उन्नीसवीं शताब्दी का भारत सामाजिक, धार्मिक और मानसिक दासता से जूझ रहा था। ऐसे समय में स्वामी विवेकानन्द का उदय केवल एक संन्यासी के रूप में नहीं, बल्कि एक **मानव-चिन्तक, युवा-प्रेरक और राष्ट्रनिर्माता** के रूप में हुआ। उन्होंने भारतीय युवाओं को आत्मगौरव, आत्मविश्वास और कर्मनिष्ठा का मार्ग दिखाया। उनका संपूर्ण जीवन मानव-चेतना के जागरण और युवाओं के उज्ज्वल भविष्य की आधारशिला रखने का सशक्त उदाहरण है।

1. स्वामी विवेकानन्द का जीवन-परिचय

स्वामी विवेकानन्द का जन्म 12 जनवरी 1863 को कोलकाता में हुआ। उनका बचपन का नाम **नरेन्द्रनाथ दत्त** था। उनके पिता विश्वनाथ दत्त एक विद्वान अधिवक्ता थे तथा माता भुवनेश्वरी देवी धार्मिक, संस्कारवान और संवेदनशील महिला थीं।

Creative Commons (CC BY-NC-SA 4.0)
This is an open access journal, and articles are distributed under the terms of the Creative Commons Attribution-NonCommercial-ShareAlike 4.0 International Public License, which allows others to remix, tweak, and build upon the work noncommercially, as long as appropriate credit is given and the new creations ae licensed under the idential terms.

Address for correspondence:
डॉ. सुधीर कुमार शर्मा, आचार्य इतिहास विभाग

How to cite this article:
शर्मा, . सुधीर . कुमार . (2026). स्वामी विवेकानन्द जी का जीवनवृत्त : युवाओं के उज्ज्वल भविष्य में एक मानव-चिंतनात्मक अध्ययन. Journal of Research & Development, 18(2(A)), 188–190.
https://doi.org/10.5281/zenodo.18937378

Quick Response Code:
Website: https://jrdrvb.org/
DOI: 10.5281/zenodo.18937378
OPEN ACCESS

Journal of Research and Development
A Multidisciplinary International Level Referred and Double Blind Peer Reviewed, Open Access
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-18, Issue-2(A)| February - 2026

पारिवारिक वातावरण ने नरेन्द्रनाथ के भीतर तार्किक सोच और आध्यात्मिक जिज्ञासा दोनों को विकसित किया। बाल्यकाल से ही नरेन्द्रनाथ तीव्र बुद्धि, निर्भीक स्वभाव और प्रश्नात्मक दृष्टि के धनी थे। वे ईश्वर के अस्तित्व को तर्क की कसौटी पर परखना चाहते थे, जो आगे चलकर उनके मानव-चिंतन का मूल आधार बना।

2. श्रीरामकृष्ण परमहंस से आध्यात्मिक प्रेरणा

नरेन्द्रनाथ का जीवन निर्णायक मोड़ तब आया जब उनका संपर्क **श्रीरामकृष्ण परमहंस** से हुआ। प्रारंभ में उन्होंने उनसे भी वही प्रश्न किया—"क्या आपने ईश्वर को देखा है?"

रामकृष्ण परमहंस का उत्तर था—"हाँ, जैसे मैं तुम्हें देख रहा हूँ।"

यह उत्तर नरेन्द्रनाथ के भीतर गहरे मानव-चिन्तन और आध्यात्मिक बोध का द्वार खोलता है। गुरु-शिष्य संबंध ने उन्हें यह सिखाया कि **मानव सेवा ही ईश्वर सेवा है**, और यही विचार आगे चलकर युवाओं के लिए जीवन-दर्शन बना।

3. स्वामी विवेकानन्द का संन्यास और विश्व-भ्रमण

1886 में रामकृष्ण परमहंस के देहावसान के बाद नरेन्द्रनाथ ने संन्यास धारण किया और वे **स्वामी विवेकानन्द** कहलाए। उन्होंने पूरे भारत का भ्रमण किया और समाज की वास्तविक स्थिति—गरीबी, अशिक्षा, जातिवाद और हीनभावना—को निकट से देखा। यह अनुभव उनके मानव-चिंतन को और प्रखर बनाता है। वे समझ गए कि भारत की उन्नति का मार्ग **युवाओं की चेतना और शिक्षा** से होकर जाता है।

4. शिकागो धर्मसभा और वैश्विक मानव-चेतना

1893 में अमेरिका के शिकागो में आयोजित **विश्व धर्म महासभा** में स्वामी विवेकानन्द का ऐतिहासिक भाषण मानव-इतिहास की दिशा बदलने वाला सिद्ध हुआ।

"**Sisters and Brothers of America**" से आरंभ हुआ उनका भाषण केवल धार्मिक नहीं, बल्कि **मानव एकता, सहिष्णुता और सार्वभौमिक भाईचारे** का घोष था।

इस भाषण ने न केवल भारत को विश्व-पटल पर गौरव दिलाया, बल्कि भारतीय युवाओं में आत्मविश्वास और आत्मसम्मान का संचार किया।

5. युवाओं के लिए स्वामी विवेकानन्द का मानव-चिंतन

स्वामी विवेकानन्द का मानव-चिंतन विशेष रूप से **युवाओं को केंद्र में रखता है**। उनके अनुसार—

- युवा राष्ट्र की ऊर्जा होते हैं
- निर्भीकता जीवन की पहली शर्त है
- आत्मविश्वास के बिना कोई भी विकास संभव नहीं

उनका प्रसिद्ध कथन—

"उठो, जागो और तब तक मत रुको जब तक लक्ष्य की प्राप्ति न हो जाए।"

यह वाक्य आज भी युवाओं के लिए जीवन-मंत्र है। वे युवाओं को शारीरिक, मानसिक और नैतिक रूप से सशक्त देखना चाहते थे।

6. शिक्षा के प्रति दृष्टिकोण: मानव-निर्माण की प्रक्रिया

स्वामी विवेकानन्द के अनुसार शिक्षा केवल पुस्तकीय ज्ञान नहीं, बल्कि **"मनुष्य-निर्माण की प्रक्रिया"** है। उनका मानव-चिंतन यह स्पष्ट करता है कि—

- शिक्षा से चरित्र निर्माण होना चाहिए
- शिक्षा आत्मनिर्भरता सिखाए
- शिक्षा समाज और राष्ट्र के प्रति उत्तरदायित्व जगाए

यह दृष्टि आज की युवा-केन्द्रित शिक्षा प्रणाली के लिए अत्यंत प्रासंगिक है।

7. मानव-सेवा और रामकृष्ण मिशन

1897 में स्वामी विवेकानन्द ने **रामकृष्ण मिशन** की स्थापना की। इसका उद्देश्य था—

- मानव सेवा
- शिक्षा प्रसार
- सामाजिक सुधार

रामकृष्ण मिशन आज भी युवाओं को सेवा, अनुशासन और मानव-मूल्यों से जोड़ने का कार्य कर रहा है, जो स्वामी विवेकानन्द के मानव-चिंतन की जीवंत अभिव्यक्ति है।

Journal of Research and Development
A Multidisciplinary International Level Referred and Double Blind Peer Reviewed, Open Access
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-18, Issue-2(A)| February - 2026

8. समकालीन युवाओं के लिए विवेकानन्द की प्रासंगिकता

आज का युवा मानसिक तनाव, दिशाहीनता और मूल्य-संघर्ष से गुजर रहा है। ऐसे समय में स्वामी विवेकानन्द का मानव-चिंतन युवाओं को—

- आत्मविश्वास देता है
- लक्ष्यबोध कराता है
- नैतिक साहस प्रदान करता है

उनका जीवन यह सिखाता है कि **व्यक्ति का विकास ही राष्ट्र का विकास है**।

उपसंहार (Conclusion)

स्वामी विवेकानन्द का जीवनवृत्त केवल एक महापुरुष की कहानी नहीं, बल्कि **मानव-चेतना के उत्थान का दर्शन** है। उनका मानव-चिंतन युवाओं को आत्मबल, सेवा-भाव और राष्ट्रप्रेम की दिशा में अग्रसर करता है। यदि आज का युवा उनके विचारों को आत्मसात कर ले, तो निश्चय ही भारत का भविष्य उज्ज्वल, सशक्त और मानवीय होगा।

संदर्भ सूची (References)

1. विवेकानन्द, स्वामी. (2018). *स्वामी विवेकानन्द सम्पूर्ण वाङ्मय* (खंड 1–8). कोलकाता: अद्वैत आश्रम।
2. विवेकानन्द, स्वामी. (2016). *कोलंबो से अल्मोड़ा तक.* कोलकाता: अद्वैत आश्रम।
3. विवेकानन्द, स्वामी. (2017). *मेरी शिक्षा की अवधारणा.* कोलकाता: अद्वैत आश्रम।
4. रोलां, रोमाँ. (2012). *स्वामी विवेकानन्द : जीवन और सार्वभौमिक संदेश.* नई दिल्ली: अद्वैत आश्रम।
5. शर्मा, राममूर्ति. (2014). *भारतीय शिक्षा दर्शन.* नई दिल्ली: राधाकृष्ण प्रकाशन।
6. मुखर्जी, एस. (2011). *भारतीय शिक्षा के महान चिंतक.* नई दिल्ली: स्टर्लिंग पब्लिशर्स।
7. मिश्र, विद्यानिवास. (2013). *भारतीय चिंतन परंपरा.* वाराणसी: चौखम्बा प्रकाशन।
8. सेन, अमरेन्द्र प्रसाद. (2006). *स्वामी विवेकानन्द: जीवन, दर्शन और प्रभाव.* नई दिल्ली: ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।